दीन–ए–इलाही का उदय: अकबर के धार्मिक समन्वयवाद का एक अध्ययन

रविंद्र, शोधार्थी
ओम स्टर्लिंग ग्लोबल विश्वविद्यालय, हिसार
ravi.nain04@gmail.com

सार

दीन–ए–इलाही का उदय सम्राट अकबर के शासनकाल के तहत मुगल भारत के धार्मिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण क्षण का प्रतिनिधित्व करता है। यह शोध दीन–ए–इलाही के ऐतिहासिक संदर्भ, विश्वासों, प्रथाओं और प्रभाव पर प्रकाश डालता है, जो एक समन्वित धर्म है जो विविध धार्मिक परंपराओं में सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश करता है। अकबर की धार्मिक सहिष्णुता और समन्वयवाद की नीतियों की जांच के माध्यम से, शोध दीन–ए–इलाही के निर्माण के पीछे की प्रेरणाओं और इसके मूल सिद्धांतों की पडताल करता है। यह कुलीनों और दरबारियों के बीच दीन–ए–इलाही को बढावा देने में अकबर की व्यक्तिगत भूमिका के साथ–साथ धार्मिक नेताओं और समुदायों से प्राप्त प्रतिक्रियाओं की जांच करता है। इसके अलावा, शोध मुगल समाज को आकार देने और बाद के शासकों को प्रभावित करने में दीन–ए–इलाही की दीर्घकालिक विरासत का आकलन करता है। कुल मिलाकर, यह अध्ययन मुगल भारत में धार्मिक समन्वयवाद की जटिलताओं और क्षेत्र के इतिहास और संस्कृति पर इसके स्थायी प्रभाव पर प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्द: शासनकाल, मुगल, भारत, धार्मिक, सांस्कृतिक,उदय, इत्यादि।

प्रस्तावना

मुगल साम्राज्य, जो अपनी भव्यता और सांस्कृतिक समृद्धि के लिए प्रसिद्ध है, ने सम्राट अकबर के शासनकाल के दौरान धार्मिक गतिशीलता में गहरा बदलाव महसूस किया। धार्मिक विविधता और सांप्रदायिक तनाव की पृष्ठभूमि के बीच, अकबर ने धार्मिक समन्वयवाद में एक साहसिक प्रयोग शुरू किया जिसे दीन–ए–इलाही, या ष्ईश्वर का धर्मष् के नाम से जाना जाता है। यह परिचय अकबर के शासनकाल के दौरान मुगल साम्राज्य का एक संक्षिप्त अवलोकन प्रदान करके और इस समन्वयवादी आंदोलन के महत्व का परिचय देकर दीन–ए–इलाही के उदय को समझने के लिए मंच तैयार करता है।16वीं से 19वीं शताब्दी तक भारतीय उपमहाद्वीप में फैला मुगल साम्राज्य, सम्राट अकबर (1556–1605) के शासन के तहत अपने चरम पर पहुंच गया। अकबर ऐसे समय में सिंहासन पर बैठा, जब हिंदू धर्म, इस्लाम, जैन धर्म, सिख धर्म और ईसाई धर्म एक–दूसरे के साथ–साथ मौजूद थेद्य जिसमें काफी धार्मिक विविधता थी। यह विविधता केवल मुगल समाज का एक पहलू नहीं थी द्य बल्कि साम्राज्य के सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य को आकार देने वाली एक परिभाषित विशेषता थी।शासन के प्रति अपने दूरदर्शी दृष्टिकोण के लिए जाने जाने वाले अकबर ने धार्मिक विभाजनों से उत्पन्न चुनौतियों को पहचाना और धार्मिक सहिष्णुता और समन्वय की नीतियों के माध्यम से उनका समाधान करने का प्रयास किया। इसी संदर्भ में अकबर ने दीन–ए–इलाही के विचार की कल्पना की, एक ऐसा धर्म जिसका उद्देश्य सांप्रदायिक सीमाओं को पार करना और अपने विविध विषयों को एक सामान्य आध्यात्मिक ढांचे के तहत एकजुट करना था।

दीन – ए – इलाही का उदय

दीन–ए–इलाही एक नया धर्म था जिसका आरंभ 1582 ई. में बादशाह अकबर ने किया था। इस धर्म में हिन्दू, मुस्लिम, बौद्ध, जैन, पारसी तथा ईसाई धर्म की मुख्य–मुख्य बातों का समावेश किया गया था। अद्यपि इसका मूल आधार एकेश्वरवाद थाद्य परंतु बहुदेववाद की झलक भी इसमें थी। तर्क पर आधारित यह धर्म धार्मिक भेदभाव से ऊपर उठकर सहिष्णुता की शिक्षा देता था। अकबर के शासन काल में इस धर्म के बहुत से अनुयायी हो गए थे। परंतु उसकी मृत्यु के बाद इसका लोप हो गया।

फ़तेहपुर सीकरी के इबादत खाने में विभिन्न धर्मों के आचार्य और संत–महात्माओं के साथ विचार–विमर्श करते रहने से अकबर के धार्मिक विचारों में बडो क्रांति हुई थी। उस समय इस्लाम से उसकी अरुचि थी और हिन्दू धर्म स्वीकार करना उसके लिए संभव नहीं था द्य अतरू सन् 1582 में उसने एक नये धार्मिक संप्रदाय को प्रचलित किया। उसने अपने दृष्टिकोण से इस्लाम, हिन्दू, जैन, ईसाई सभी धर्मों की अच्छाइयों को लेकर एक नये संप्रदाय की स्थापना की और उसका नाम दीन इलाही (भगवान का धर्म) रखा था। इस संप्रदाय का संस्थापक होने से अकबर का स्थान स्वतः ही सर्वोच्च था। वह सम्राट के साथ ही पैगंबर भी बन गया और अबुलफजल उस नये संप्रदाय का खलीफा हुआ। इस धर्म के अनुयायी मुसलमान और हिन्दू दोनों ही थे, लेकिन उनकी संख्या उँगलियों पर गिनने लायक थी। अधिकांश मुसलमानों और हिन्दुओं ने नये संप्रदाय की उपेक्षा की। प्रमुख दरबारियों में, मुसलमानों में शेख मुबारक, फैजी, अबुलफजल आदि थे। हिन्दुओं में केवल एक बीरबल ने उसे स्वीकार किया था। अकबर ने निकट संबंधी और प्रमुख दरबारी राजा भगवानदास तथा मानसिंह ने उसके प्रति कोई रुचि नहीं दिखलाई थी। अकबर के अंतरूपुर में किसी रानी या बेगम ने भी इस धर्म को स्वीकार नहीं किया था।

15वों शताब्दी के आठ दशक से लेकर 16वीं शताब्दी के प्रथम शताब्दी तक के काल को दीन–ए–इलाही कहां जाता है। अकबर ने 1582 ई. में एक नवीन धर्म की स्थापना की जिसे दीन–ए–इलाही कहा गया। दीन का अर्थ होता है 'धर्म और इलाही का अर्थ 'ईश्वर' हेाता है। अतः 'दीन–ए–इलाही' का अर्थ ईश्वर का धर्म हुआ है द्य इसमें प्रत्येक धर्म की अच्छी बातों को लिया गया था।दीन–ए–इलाही, के रूप में अपने समय के दौरान "तौहीद–ए–इलाही "(देवी एकेश्वरवाद) या दैवीय आस्था के रूप में जाना जाता द्य यह एक समन्वित धर्म या आध्यात्मिक नेतृत्व कार्यक्रम था द्य जिसे मुगल सम्राट अकबर ने 1582 में प्रतिपादित किया था द्य जिसका उद्देश्य अपने साम्राज्य के धर्मों के कुछ तत्वों को मिलाना था और इस तरह उन मतभेदों को सुलझाना था जो उनकी प्रजा को विभाजित करते थे। इसमें तत्व मुख्य रूप से इस्लाम , हिंदू धर्म और पारसी धर्म से लिए गए थेद्य लेकिन कुछ अन्य ईसाई धर्म , जैन धर्म और बौद्ध धर्म से भी लिए गए थे।

नाम

दीन–ए इलाही नाम का शाब्दिक अर्थ है ईश्वर का धर्म या ईश्वरीय धर्म। प्रसिद्ध इतिहासकार मुबारक अली के अनुसार , दीन–ए इलाही एक ऐसा नाम है जिसका इस्तेमाल अकबर के काल में नहीं किया गया था। उस समय, इसे तौहीद–ए–इलाही (ईश्वरीय एकेश्वरवादष) कहा जाता था , जैसा कि अकबर के शासनकाल के दौरान एक दरबारी इतिहासकार अबुल–फजल ने लिखा है। यह नाम अकबर के विश्वास के लिए विशेष रूप से एकेश्वरवादी फोकस का सुझाव देता है। वह दबिस्तान –ए–मजहब नाम का उपयोग करता है तथा इलाही में विश्वास करने का उल्लेख करता है ।

इतिहास

अकबर ने अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता को बढावा दिया और यहां तक कि दार्शनिक और धार्मिक मुद्दों पर बहस को प्रोत्साहित किया। इसने 1575 में फतेहपुर सीकरी में इबादत खाना (पूजा का घर) का निर्माण कियाद्य जिसने ईसाई, हिंदू, जैन और पारसी सहित सभी धार्मिक संप्रदायों के धर्मशास्त्रियों, कवियों, विद्वानों और दार्शनिकों को आमंत्रित किया।

चूँकि अकबर गंभीर डिस्लेक्सिया से पीडति था । जिससे वह पढने या लिखने में पूरी तरह से असमर्थ हो गया था । इसलिए उपासना गृह में इस तरह के संवाद आस्था के सवालों की खोज का प्राथमिक साधन बन गए। अपनी पूर्वोक्त निरक्षरता के बावजूद अकबर अंततः हिंदी , फारसी , ग्रीक , लैटिन , अरबी और कश्मीरी में 24,000 से अधिक ग्रंथों से भरा एक पुस्तकालय जमा किया । बाद में मुगल सम्राट और अकबर के बेटे जहांगीर ने कहा कि उनके पिता हमेशा हर पंथ और धर्म के विद्वानों से जुड थे। स्पेन के राजा फिलिप द्वितीय को लिखे एक पत्र में , अकबर ने अफसोस जताया कि इतने सारे लोग अपने धर्म के भीतर के मुद्दों की जांच नहीं करते हैं । यह कहते हए कि ज्यादातर लोग उस धर्म का पालन करेंगे जिसमें वे, पैदा हुए और शिक्षित थे । इस प्रकार खुद को छोडकर, सत्य का पता लगाने की संभावना तलाशते है, जो मानव बुद्धि का सबसे महान लक्ष्य है।

जब तक अकबर ने दीन–ए इलाही की स्थापना की, तब तक उसने एक दशक पहले 1568 मे जजिया (गैर–मुसलमानों पर कर) को निरस्त कर दिया था। 1578 में शिकार करते समय एक धार्मिक अनुभव ने उसकी धार्मिक परंपराओं में उसकी रुचि को और बढा दिया। इबादत खाना में हुई चर्चाओं से अकबर ने निष्कर्ष निकाला कि कोई भी धर्म सत्य के एकाधिकार का दावा नहीं कर सकता है। यह रहस्योद्घाटन 1582 विभिन्न पवित्र मुसलमानों में दीन–इलाही बनाने के लिए प्रेरित किया तथा इस घटना पर शेख अहमद सरहिंदी ने इसे इस्लाम की निंदा के रूप में व्यक्त किया । कुछ आधुनिक विद्वानों ने तर्क दिया है कि दीन–ए इलाही एक नए धर्म के बजाय एक आध्यात्मिक शिष्यत्व कार्यक्रम था।

अकबर की मंशा

दीन–ए–इलाही को एक धर्म के रूप में पेश करने के पीछे अकबर की दो मंशाएँ थीं । पहला कि सभी जातियों और धार्मिक सम्प्रदाय के लोग एक सूत्र में बंध जाएँ । जिससे उसके साम्राज्य में स्थिरता आये और सभी राजा धर्म के प्रति एक ही दृष्टिकोण रखें । दूसरी मंशा यह थी कि अकबर खुद को राष्ट्रीय सम्राट के रूप में प्रतिष्ठित करवाना चाहता था । उसकी इच्छा थी कि प्रजा उसे भगवान् का प्रतिनिधि मान ले और विद्रोहात्मक रवैया त्याग दे । नए धर्म का उद्देश्य सभी धर्मों में समन्वय और एकता स्थापित करना भी था।

दीन–ए–इलाही का निर्माण

1582 ई. में अकबर ने धार्मिक नेताओं, महत्त्वपूर्ण सरदारों और अन्य गण्यमान्य व्यक्तियों की सभा बुलाई और उनसे अनुरोध किया कि वे कोई ऐसा मार्ग निकालें जिससे साम्प्रदायिक भेदभाव को भूलकर सभी व्यक्ति शास्वत धर्म के सार्वभौम, सर्वमान्य आचरणयुक्त सिद्धांतों के अनुयायी बन सकें । फलत: अकबर ने 1582 ई. में तौहीद–ए–इलाही (दैवी एकेश्वरवाद) की घोषणा की जो बाद में दीन–ए–इलाही (ईश्वर का धर्म) के नाम

से विख्यात हुआ । सच तो यह है कि दीन–ए–इलाही किसीप्रकार का धर्म नहीं था । यह एक ऐसा विचार था जिससे कुछ व्यक्तियों का समूह अकबर के विचारों से सहमत था और उसे अपना धर्म गुरु मानता था।

दीन–ए–इलाही का स्वरूप

1. अकबर के धर्म का पालन करने वालों को निश्चित नियमों का पालन करना पड़ता था।

2. गुरु सर्वोच्च माना जाता था।

3. दबिस्तान मजाहिब में इस धर्म के पालन करने वालों के लिए दिशा–निर्देश दिए गए थे।

4. दीन–ए–इलाही के अनुयायियों को यह स्वीकार करना पड़ता था कि ईश्वर एक हैऔर उसका प्रतिनिधि अकबर है और वे उसके शिष्य हैं।

5. हर रविवार को अकबर अपने शिष्यों को दीक्षा देकर इस धर्म में प्रवेश करवाता था।

6. नए शिष्य को अकबर के सामने ही धर्म स्वीकार करना पडता था. इसके बदले अकबर उसे पगडो पहनाता था जिसपर अल्लाह हो अकबर" लिखा होता था।

7. इस धर्म को स्वीकार करने वालों को अपने मूल धर्म को छोडने की अनिवार्यता नहीं थी ।

8. नए धर्म के अवलम्बियों के लिए निरामिष होना जरूरी था।

9. दान आदि कर्मों पर विशेष बल दिया गया था।

10. सम्राट के प्रति श्रद्धा और भक्ति तथा अग्नि की पूजा अनिवार्य थी।

11. रजस्वला और गर्भवती स्त्रियों के साथ शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करने पर भी पाबंदी थी।

12. दीन–ए–इलाही में चार श्रेणी के अनुयायी थे द्य पहली श्रेणी में जो अनुयायी आते थे वे अकबर के लिए अपनी सम्पत्ति समर्पित करने के लिए हमेशा तत्पर रहते थे । दूसरी श्रेणी में जो आते थे वे सम्पत्ति एवं अपना जीवन अर्पण करने को भी तैयार रहते थे। तीसरी श्रेणी के अनुयायी धन ओर जीवन के साथ–साथ सम्राट के लिए अपनी संतान को भी निछावर करने को तैयार थे । अंतिम या चौथी श्रेणी में जो सदस्य थे वे अपना सब कुछ सम्राट के लिए अर्पण करने को तैयार रहते थे।

दीन–ए–इलाही का प्रसार

अब प्रश्न उठता है कि दीन–ए–ईलाही को कितने लोगों ने स्वीकारा ? दरअसल अकबर का यह धर्म अधिक व्यापक नहीं हो पाया । अकबर के जीवनकाल में ही इस धर्म को मानने वालों की संख्या कम थी । न हिन्दू ने और न मुसलमान ने इस धर्म को स्वीकारा । राज्य के 22 महत्त्वपूर्ण लोगों ने ही दीन–ए–ईलाही धर्म को स्वीकारा । इन 22 महत्त्वपूर्ण लोगों में बीरबल ही एकमात्र हिन्दू था जिसने दीन–ए–ईलाही को स्वीकाराद्य कट्टर मुसलामानों ने अकबर के द्वारा इस्लाम धर्म और प्रथाओं पर किये गए किए गए आघातों के कारण उसके इस नए धर्म को ठुकरा दियाद्य सूफी संत शेख अहमद सरहिंदी ने अकबर के इस धर्म का

प्रबल विरोध किया। उसका मानना था कि अकबर का यह धर्म इस्लाम की अवमानना करने के बराबर है। नए धर्म के लोकप्रिय नहीं होने के पीछे अनेक कारण थे। एक कारण यह भी हो सकता है कि अकबर ने दीन–ए–ईलाही धर्म को स्वीकारने के लिए जनता को बाध्य नहीं किया द्ययह धर्म अकबर के इर्द–गिद सम्मानित लोगों में ही सिमटकर रह गया। अकबर की मृत्यु के बाद दीन–ए–ईलाही भी समाप्त हो गया।

निष्कर्ष

सम्राट अकबर के शासनकाल में दीन–ए–इलाही का उदय मुगल भारत में धार्मिक गतिशीलता की जटिलता और विविधता के बीच धार्मिक सद्भाव की स्थायी खोज का प्रमाण है। इस समन्वयवादी आंदोलन की हमारी खोज के माध्यम से, हमने दीन–ए–इलाही की बहुमुखी प्रकृति और मुगल समाज और उससे परे इसके प्रभाव को उजागर किया है।धार्मिक सहिष्णुता और समन्वय की नीतियों की विशेषता वाले शासन के प्रति अकबर के दूरदर्शी दृष्टिकोण ने दीन–ए–इलाही की नींव रखी। सांप्रदायिक सीमाओं को पार करने और एक सामान्य आध्यात्मिक ढांचे के तहत अपने विविध विषयों को एकजुट करने की कोशिश करके, अकबर ने धार्मिक पहचान और अधिकार की पारंपरिक धारणाओं को चुनौती दी।हालाँकि, एक धार्मिक आंदोलन के रूप में दीन–ए–इलाही की सफलता सीमित थी और इसका दीर्घकालिक प्रभाव विद्वानों के बीच बहस का विषय बना हुआ है। हालाँकि यह मुगल अभिजात वर्ग के बीच एकता की भावना को बढावा देने और धार्मिक समुदायों के बीच संवाद को बढावा देने में सफल रहा, लेकिन यह आम जनता के बीच व्यापक स्वीकृति हासिल करने में विफल रहा। इसके अलावा, दीन–ए–इलाही की विरासत पर बाद के शासकों की नीतियों और रूढवादी धार्मिक प्रथाओं के पुनरुत्थान का प्रभाव पडा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. दीन–ए इलाही – ब्रिटानिका ऑनलाइन इनसाइक्लोपीडिया

2. ए बी सी डी रॉय चौधरी, माखन लाल (1997) पहली बार 1941 में प्रकाशित, दी दीन–ए–इलाही, या, अकबर का धर्म (चौथा संस्करण), नई दिल्लीः ओरिएंटल रीप्रिंट, आईएसबीएन 978–81–215–0777–6

3. अबुल–फजल इब्न मुबारक (2010) । अबुल–फजल का अकबरनामा । दिल्लीरू कम कीमत के प्रकाशन। आईएसबीएन 81–7536–481–5.

4. ए बी द दबिस्तान, या स्कूल ऑफ मैनर्स, ट्रांस। डेविड शी और एंथनी ट्रॉयर, 1843, अनुवाद में फारसी साहित्य, पैकार्ड मानविकी संस्थान

5. ए बी अकबर, दार्शनिक–राजा में सहिष्णुता की खोज ।

6. शिमेल, एनीमेरी (2006) द एम्पायर ऑफ द ग्रेट मुगल्स रू हिस्ट्री, आर्ट एड कल्चर , रीकशन बुक्स, आईएसबीएन 1–86189–251–9

7. लेफवरे, कोरिन (2015–04–01)। दीन–ए इलाही । इस्लाम का विश्वकोश, तीन ।

8. दीन–ए इलाही – ब्रिटानिका ऑनलाइन इनसाइक्लोपीडिया